शिक्षक निर्देशिका

धरती के लाल

प्राक्कथन

प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम में अनुदेशक एक कठिन एवं महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इस कार्यक्रम में अनुदेशक की भूमिका परम्परावादी अध्यापक से बिल्कुल भिन्न हो जाती है। अनुदेशक के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि वह शिक्षार्थियों के स्तर पर उतर कर शिक्षार्थियों से मिलकर उनमें चेतना, ज्ञान के प्रति उत्साह तथा साक्षरता के प्रति ललक पैदा करे। समय-समय पर पाठ्यपुस्तक के साथ-साथ शिक्षक के लिए कविता, कहानी, नाटक, परिचर्चा, मान्य ग्रन्थों के उद्धरण एवं अनुभवों की चर्चा भी आवश्यक हो जाती है। जितने प्रभावशाली ढंग से अनुदेशक कार्य करेगा शिक्षार्थी उतने ही उससे प्रभावित होंगे और कार्यक्रम सफल होगा।

केवल पाठ्यपुस्तक के माध्यम से पढ़ाना किसी भी अनुदेशक के लिए बहुत कठिन होता है। प्रशिक्षण एवं निर्देशिका अनुदेशक के तकनीकी ज्ञानवर्धन के लिए अत्यंत आवश्यक है। अत: यह निर्देशिका अनुदेशक को मार्गदर्शन देने के लिए बनाई गई है। यह प्रशिक्षण के दौरान एवं उसके बाद में पाठ्यपुस्तक को पढ़ाते समय काम में लाई जानी चाहिए।

यह निर्देशिका "धरती के लाल" पठन-पाठन की सामग्री पर आधारित है। यह सामग्री ग्रामीण क्षेत्र के लोगों की आवश्यकताओं, रुचियों एवं परिवेश को ध्यान में रखते हुए बनाई गई है। इस सामग्री में "धरती के लाल" पाठ्यपुस्तक, अभ्यास- पुस्तक, चार्ट, फ्लैश कार्ड, जाँच-पत्र पुस्तिका शामिल है। इस निर्देशिका में मोटे तौर पर इन बातों की चर्चा की गई है। प्रौढ़ शिक्षा की खास-खास बातें ; प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम के उद्देश्य ; प्रौढ़ शिक्षा में पढ़ने-पढ़ाने के तरीके; इस कार्यक्रम में अपेक्षित सामग्री तथा उसका उपयोग आदि। पाठ्यपुस्तक के पाठों के बारे में इस निर्देशिका में प्रत्येक विषय के उद्देश्य, पाठ में साक्षरता के तत्व तथा विषय से संबंधित चर्चा के लिए सुझाव दिए गए हैं। यह आशा की जाती है कि अनुदेशक उपयोगी पाठों को पढ़ाने से पहले निर्देशिका में दिए गए सुझावों को भली भाँति पढ़ेंगे तथा काम में लाएँगे।

पाठ्यचर्या एवं सामग्री निर्माण एकक के अकादमिक सदस्य विशेषकर श्रीमती बिमला भटनागर, संयुक्त निदेशक, जिनके मार्गदर्शन में शिक्षक निर्देशिका का निर्माण हुआ है, धन्य-वाद के पात्र हैं।

प्रौढ़ शिक्षा में कार्यरत शिक्षाकर्मियों से निवेदन है कि वे इस निर्देशिका के बारे में अपने सुझावों से निदेशालय को अवगत कराएँ ताकि अगले संस्करण में इसे और उपयोगी बनाया जा सके।

एस० के० टुटेजा
निदेशक

नई दिल्ली
7 फरवरी 1984

प्रिय शिक्षक,

आपको "धरती के लाल" नाम की पुस्तक प्रौढ़ शिक्षा के पहले चरण में काम में लाने के लिए दी गई है। इसके साथ एक अभ्यास-पुस्तक और 10 चार्ट हैं। आप इन्हें अपने गाँव के प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों में काम में लाने वाले हैं। इस निर्देशिका में इस सामग्री के उपयोग के बारे में कुछ जरूरी जानकारी दी गई है। आशा है आप इस निर्देशिका का पूरा लाभ उठाएँगे।

प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम की खास-खास बातें

यह कार्यक्रम 15 या इससे अधिक उम्र वालों के लिए है। इसमें 15 से 35 आयु-वर्ग के प्रौढ़ों पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए। प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों में आने वाले शिक्षार्थियों को तीन फायदे अवश्य होने चाहिए जो नीचे दिए गए हैं :—

(क) साक्षरता :—उनको पढ़ना-लिखना आना चाहिए।

(ख) चेतना :—उनको अपने जीवन और काम-धन्धों के बारे में जागृति और जरूरी जानकारी मिलनी चाहिए।

(ग) कार्यात्मकता :—वे जो कार्य कर रहे हैं उसे और अच्छी तरह करने की योग्यता आ जानी चाहिए तथा कुछ नए कार्य सीखने से उनकी कार्यकुशलता में बढ़ोतरी होनी चाहिए।

प्रौढ़ शिक्षा में पढ़ने-पढ़ाने के तरीके

प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों में आने वाले प्रौढ़ अक्सर ऐसे होते हैं जिन्हें पढ़ना-लिखना नहीं आता, लेकिन उनमें सोचने समझने की अच्छी शक्ति होती है। उनके पास जीवन के गहरे अनुभव होते हैं। वे काफी समझदार और जानकार होते हैं। इसलिए उनके अनुभवों, समझदारी और जानकारी का पूरा फायदा उठाना चाहिए तथा उनकी क्षमताओं के आधार पर पढ़ने-पढ़ाने के तरीके अपनाने चाहिए। ऐसे कुछ तरीकों की जानकारी नीचे दी जा रही है। 'धरती के लाल' पुस्तक को पढ़ाते समय शिक्षक को इन तरीकों को पूरी तरह से काम में लाना चाहिए।

1. विषय वस्तु को अपने पूरे रूप में प्रस्तुत करना :

जब प्रौढ़ शिक्षार्थी के सामने कोई विषय अधूरा रखा जाता है तो उसे

समझने में मुश्किल होती है इसलिए पूरा विषय शिक्षार्थी के सामने रखना चाहिए। इससे सीखने में सरलता होती है। सीखने का यह तरीका बहुत अच्छा माना जाता है।

2. समानता और भिन्नता के आधार पर सीखना :

जिस शब्द या विषय को हम सिखाना चाहते हैं, उसमें पहले से सीखे गए विषय की कुछ समानताएँ और कुछ भिन्नताएँ हो सकती हैं। इन समानताओं और भिन्नताओं के आधार पर नया विषय सीखना सरल हो जाता है जैसे "ग" के बीच में लाइन खींचने से "म" बनता है, "ब" और "ष" में से लाइन हटा देने से क्रमश: "व" और "प" बन जाते हैं।

3. कार्यात्मकता का तरीका :

इस तरीके से शिक्षार्थी अपना काम करते हुए सीखता है तथा जो सीखता है उसका जीवन में प्रयोग करता है।

4. चर्चा के द्वारा सीखना :

आपसी चर्चा के द्वारा एक दूसरे के अनुभवों से सीखने में भी आसानी होती है क्योंकि उनका संबंध सीधा जीवन और वातावरण से होता है। इसमें विषय से सम्बन्धित कुछ प्रश्न किये जाते हैं। फिर उन पर बात-चीत शुरू की जाती है। बात-चीत के दौरान प्रौढ़ों को अपने जीवन से सम्बन्धित समस्याओं और परेशानियों पर बारीकी से गौर करने का मौका मिलता है। किसी को ऐसा भी नहीं लगता कि कोई बात उन पर थोपी जा रही है।

कुछ सामान्य बातें :

ऊपर दिए गए तरीकों को अपनाने के साथ-साथ नीचे दी गई बातों का भी ध्यान रखना चाहिए।

(1) हर आदमी यह चाहता है कि उसके सामने जो समस्या है वह जितनी जल्दी हो सके दूर हो। इसलिए जो विषय पढ़ाया जा रहा हो उसे शिक्षार्थी की समस्या के साथ जोड़ना चाहिए।

(2) समस्या के अलावा विषय को शिक्षार्थी की रुचि के साथ भी जोड़ना अच्छा होता है।

(3) नई बातें सीखते समय शिक्षार्थी पहले आसान बात सीखता है, फिर मुश्किल बात। इसलिए शिक्षा को आसान से कठिन की ओर बढ़ाया जाना चाहिए।

(4) इसी तरह पहले जानी हुई बातें बतानी चाहिए फिर उससे जोड़ते हुए नई बातें सिखानी चाहिए क्योंकि जानी हुई बात से संबंधित उदाहरण देकर बताया जाए तो सीखना-सिखाना बहुत आसान हो जाता है।

(5) शिक्षार्थी उन बातों को पहले सीखता है जो देखी जा सकती हैं। उन बातों को देर से सीखता है जिनकी केवल कल्पना की जा सकती है। उदाहरण के लिए "पेड़ों से छाया और फल मिलते हैं" यह बात सीखना आसान है और जल्दी समझ में आ जाएगी। लेकिन पेड़ों की वजह से बारिश क्यों होती है, यह बात उसकी समझ में देर से आएगी। इसलिए उन बातों को पहले सिखाना चाहिए जिनको देखा जा सकता है।

(6) एक ही बात अलग-अलग ढंग से समझाने पर जल्दी समझ में आती है। इसलिए जिस विषय के बारे में हम सिखाना चाहते हैं उसका भिन्न-भिन्न परिस्थितियों में प्रयोग होता हुआ देखकर शिक्षार्थी पक्का और पूर्ण ज्ञान प्राप्त कर लेता है। ठीक उसी तरह एक अक्षर को यदि शब्द के प्रारम्भ, मध्य और अन्त में शिक्षार्थी के सामने अलग-अलग तरह से रखा जाए तो उसका ज्ञान जल्दी पक्का हो जाता है।

सामग्री

सामग्री ऐसी होनी चाहिए जिससे प्रौढ़ों में साक्षरता के प्रति अभिरुचि उत्पन्न हो तथा पढ़ना-लिखना आसानी से सीखा जा सके।

इस किताब को बनाने से पहले हमने कई गाँवों का दौरा किया। वहाँ के वातावरण और वहाँ की समस्याओं को समझने की कोशिश की। फिर इन सब बातों को ध्यान में रखकर पाठ बनाए। इस तरह "धरती के लाल" में

पहले पाठ से ही यह कोशिश की गई है कि यह सामग्री ग्रामीण प्रौढ़ों के जीवन से संबंधित हो। उन्हें जरूरी जानकारी मिल सके। उनमें नए विषयों के बारे में चेतना आए। उन्हें काम करने के नए तौर-तरीकों के बारे में मालूम हो जिससे पढ़ने वाले अपने जीवन में तरक्की की ओर बढ़ सकें।

"धरती के लाल" सामग्री का उपयोग :

"धरती के लाल" सेट में नीचे दी गई सामग्री शामिल है :-

(1) पाठ्य पुस्तक
(2) अभ्यास-पुस्तक
(3) चार्ट
(4) शिक्षक-निर्देशिका
(5) जाँच-पत्र-पुस्तिका

प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों में इनका उपयोग कैसे करना है, इसकी जानकारी आगे दी जा रही है। जरूरत के अनुसार इसमें थोड़ा हेर-फेर कर लेना चाहिए :

(क) यह आवश्यक है कि कक्षा में आने से पहले शिक्षक पाठ का ब्यौरा इस निर्देशिका में देख ले। उसे यह जान लेना चाहिए कि "पाठ का उद्देश्य क्या है" ? उसमें कौन-कौन से नए अक्षर पढ़ाए जाने हैं, चर्चा में क्या बात की जाएगी आदि।

(ख) जब शिक्षार्थी कक्षा में आएँ तो पहले उनसे एक दो बातें कीजिए। फिर कुछ रुककर चार्ट का वह पाठ टाँग दीजिए जिस पर चर्चा करनी है।

(ग) चार्ट को देखते ही शिक्षार्थी के मन में अनेक बातें उठेंगी। उनसे पूछिए आप चार्ट में क्या देख रहे हैं ? अथवा चित्र में क्या हो रहा है ? यदि वे चित्र को ठीक समझ रहे हों तो ठीक है नहीं तो आप स्वयं ही चित्र में दिखाई देने वाली बातों के बारे में विस्तार से चर्चा कीजिए।

(घ) चर्चा में से वे शब्द चुन लीजिए जो चार्ट में दिए गए हैं । चार्ट की मदद से पहले शब्दों की ओर, फिर जिन अक्षरों से मिलकर वह शब्द बना है उनकी पहचान करवाइए। इतना अभ्यास करवा दीजिए कि वे इन शब्दों और अक्षरों को पहचानने लगें।

इस सामग्री में सभी पाठों के चार्ट नहीं दिए गए हैं। जिन पाठों के चार्ट नहीं हैं उनके लिए आप चार्ट स्वयं बना सकते हैं। अखबार या कहानी की किताब भी उपयोग कर सकते हैं। पाठ्य पुस्तक के चित्रों से भी चर्चा शुरू की जा सकती है।

(ङ) चर्चा शुरू करने के बाद श्यामपट का प्रयोग कीजिए । पाठ के नए वाक्य या शब्दों को बोर्ड पर लिखिए, उन्हें बोलिए और बुलवाइए और फिर वाक्यों को शब्दों में और शब्दों को अक्षरों में तोड़कर पढ़ाइए। अक्षरों की पहचान करवाने के बाद उनसे दूसरे शब्द बनवाइए। चार्ट और ब्लैक बोर्ड की मदद से उन सब नए अक्षरों और शब्दों का अभ्यास करवा दीजिए जो पाठ्य पुस्तक के पाठ में दिए गए हैं।

(च) अब पाठ्य पुस्तक में दिए गए पाठ पढ़वाने का समय आ गया है । अगर आपने चार्ट और श्यामपट का सही इस्तेमाल किया है तो पाठ्य पुस्तक का पाठ शिक्षार्थी स्वयं पढ़ लेंगे। फिर भी शब्दों का सही उच्चारण और मात्राओं की सही पहचान के लिए आप शिक्षार्थियों के साथ पाठ को स्वयं पढ़िए और फिर उन्हें पढ़ने को कहिए। अगर वे अलग-अलग न पढ़ पाएँ तो उन्हें तीन-तीन या चार-चार के समूहों में बाँट दीजिए और हर समूह को मिलजुल कर अलग-अलग पढ़ने के लिए कहिए। इसके बाद भी वे न पढ़ पाएँ तो आप उनकी मदद कीजिए। जब पाठ में दिए गए शब्दों, अक्षरों की पहचान हो जाए तो अभ्यास पुस्तक पर आ जाइए। इसमें वही पाठ निकालें जो पाठ्य पुस्तक में पढ़ा था। इसमें दिया गया पढ़ने व लिखने का अभ्यास करवाइए।

(छ) शिक्षार्थी की प्रगति जानने के लिए दिए गए जाँच-पत्रों का भी प्रयोग कीजिए ।

इस तरीके से पढ़ाते समय नीचे दी गई बातों पर ध्यान दीजिए :

(1) जब तक शिक्षार्थी किसी बात को पूरी तरह समझ न ले तब तक अगली बात पर न जाइए ।

(2) सभी शिक्षार्थी एक साथ नहीं चल पाते । जो पिछड़ गए हैं उन पर अधिक ध्यान दीजिए । उन्हें कुछ समय पहले बुला लें या उनको अलग से समय दे दें ।

(3) एक पाठ में आए नए अक्षरों और शब्दों की पहचान कराने में एक या दो दिन का समय लग सकता है । लेकिन चर्चा करने में, लिखने के अभ्यास में, पाठ को पक्का कराने आदि में शुरू में तीन-चार दिन और बाद में दो-तीन दिन लग सकते हैं । पूरी पाठ्य पुस्तक लगभग 150 घण्टों में खत्म हो जानी चाहिए ।

(4) "धरती के लाल" पाठ्य पुस्तक का उद्देश्य और उसमें दिए गए विषय :

उद्देश्य इसमें मोटे तौर पर दो बातें दी गई हैं ?

(क) गाँवों के प्रौढ़ों के जीवन से संबंधित कुछ खास स्थितियों और उनके बारे में चर्चा करके जागरूकता पैदा करना व ज्ञान देना ।

(ख) पढ़ना और लिखना सिखाना ।

इसमें निम्नलिखित विषय सम्मिलित किए गए है :-

(1) खेती

पानी की कमी, पानी का खारापन, बारिश न होना, अच्छे

बीज और खाद, सरकारी योजनाएँ,

(2) सहकारिता

सहकारी समिति के फायदे,

(3) उद्योग धन्धे

दूध का धंधा, सिलाई-कढ़ाई, उद्योग धंधों के लिए बैंक से ऋण लेना।

(4) नागरिकता

प्रजातन्त्र, चुनाव का महत्व, सही आदमी का चुनाव, पंचायत के काम, देश की समस्याएँ, देश की एकता।

(5) शिक्षा और विज्ञान

शिक्षा से लाभ, बच्चों, महिलाओं और पुरुषों की शिक्षा, प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र, विज्ञान की देन।

(6) समाज का विकास

तीज-त्यौहार, छोटी उमर में विवाह न करना, दहेज की बुराइयाँ और शराब से होने वाले नुकसान।

(7) स्वस्थ परिवार

(क) घर की देखभाल परिवार के लोगों में पारस्परिक संबंध, छोटा परिवार, गर्भवती महिलाओं के लिए जरूरी बातें, बच्चे की ऊपरी खुराक, पीने के पानी की समस्या, आसपास की सफाई।

(ख) पढ़ने-लिखने के अन्तर्गत निम्नलिखित को शामिल किया गया है :

(1) हिन्दी की वर्णमाला के सब अक्षरों को पढ़ना और लिखना।

18- /DAE/ND/85

(2) सभी संयुक्त अक्षरों को पढ़ना और लिखना ।

(3) इन अक्षरों से बने शब्दों को पढ़ना ।

(4) छोटे वाक्यों और उनसे बने पैराग्राफ को पढ़कर समझना और उनको देखकर व सुनकर लिखना ।

पढ़ने-लिखने का अपेक्षित स्तर

(क) शिक्षार्थी अपनी रुचि और आवश्यकता के विषयों से संबंधित पठन-सामग्री को, जो सरल भाषा में लिखी हो सही स्थानों पर रुकते हुए और बल देते हुए, बोल कर पढ़ सके ।

(ख) वह नव साक्षरों के लिए लिखी पुस्तकों आदि को लगभग पचास शब्द प्रति मिनट के हिसाब से मन ही मन में पढ़ सके ।

(ग) वह सड़कों के किनारे दिए गए संकेतों, इश्तहारों, हिदायतों और नवसाक्षरों के लिए तैयार किए गए समाचार-पत्रों को समझकर पढ़ सके ।

(घ) वह अपने धंधों और जीवन से संबंधित लिखे गए विषयों को पढ़ सके ।

लिखना

(क) शिक्षार्थी दस शब्द प्रति मिनट के हिसाब से संदेश को समझते हुए नकल कर सके ।

(ख) वह सात शब्द प्रति मिनट के हिसाब से इमला लिख सके ।

(ग) वह ठीक अन्तर से और सीधी लाइन में लिख सके ।

(घ) वह अपने धन्धों और जीवन से संबंधित संदेश को लिख सके ।

(5) साक्षरता कार्यक्रम के उद्देश्यों की पूर्ति की जाँच :

अब हम कोई काम करते हैं, तो यह देखना चाहते हैं कि काम कितना

हुआ और कैसा हुआ। यह जाँच हम दो तरह से करते हैं। एक तरह से जाँच तो हम रोज हर पाठ के साथ करते हैं। इसमें हम यह देखते हैं कि पढ़ाया गया या सिखाया गया पाठ अच्छी तरह से पक्का कर लिया गया है या नहीं। जाँच के लिए अभ्यास-पुस्तक में कई तरह के अभ्यास दिए गए हैं इसलिए आप इसका उपयोग करना न भूलें।

दूसरी जांच कुछ निश्चित समय बाद और कार्यक्रम के अन्त में की जाती है। यह जाँच हर तीसरे या चौथे महीने के अन्त में या हर सातवें या दसवें पाठ के बाद की जा सकती है। इस काम के लिए भी कुछ जाँच-पत्र दिए गए है। हर सातवें पाठ के बाद इनका उपयोग अवश्य करें।

आइए अब "धरती के लाल" पाठ्य पुस्तक में दिए गए विषयों को पढ़ाने के बारे में विस्तार से जान लें।

पाठ 1

पाठ्य पुस्तक

कमाई

विषय : खेती के रोजगार में कमाई की समस्या।

उद्देश्य : यह समझना कि खेती से होने वाली आय उचित साधनों पर निर्भर करती है।

साक्षरता : क, म, ई, ा (आ की मात्रा)

चित्र : मनीराम बड़े दुख से अपने हाथ के पैसों को देख रहा है और सोच रहा है कि कितनी कम कमाई हुई है।

चर्चा के लिए सुझाव : खेती में कमाई सदा एक-सी नहीं होती, इसके क्या कारण हैं?

कभी-कभी कमाई पहले जितनी होने पर भी कम महसूस क्यों होने लगती है?

रोजगार बढ़ाने में शिक्षा किस प्रकार सहायता करती है ?

पाठ 2

जमीन का पानी

विषय : जमीन में पानी की कमी ।

उद्देश्य : खेती के लिए पानी की कमी या खराबी के कई कारण हो सकते हैं। गाँव में जो दिक्कतें हों उन्हें लेकर चर्चा करना ।

साक्षरता : ज, न, प, ा

चित्र : खेत सूखा पड़ा है । लोग पीने के लिए दूर-दूर से पानी ला रहे हैं ।

चर्चा के लिए सुझाव : आपके गाँव में पानी लगभग कितनी गहराई पर मिलता है ?

जमीन में पानी की कमी होने पर आप खेती के लिए पानी का क्या इन्तजाम करते हैं ?

पाठ 3

पानी खारा था

विषय : खारे पानी की समस्या ।

उद्देश्य : कहीं-कहीं पानी खारा होता है। खारा पानी फसल के लिए ठीक नहीं होता। खारे पानी की जाँच कराना बहुत जरूरी है। इन बातों की जानकारी देना ।

साक्षरता : ख, र, थ

चित्र : एक कुआँ है जिस का पानी खारा है। इस पानी से पौधे अच्छी तरह पनप नहीं रहे हैं ।

चर्चा के लिए सुझाव : आप के गाँव में जमीन का पानी खारा है या मीठा ?

क्या आपने कभी जमीन के पानी की जाँच करवाई है ?

पानी की जाँच कहाँ-कहाँ करवाई जा सकती है ?

यदि पानी के खारेपन से जमीन खराब हो जाए तो उसे ठीक करने के लिए आप किस से सलाह ले सकते हैं ?

पाठ 4

नया बीज लाना

विषय : नये बीज के प्रयोग से लाभ।

उद्देश्य : इस पाठ में चर्चा द्वारा प्रौढ़ों को यह जानकारी मिलनी चाहिए कि नई किस्म के बढ़िया बीज से क्या लाभ हैं ?
नये बीज कहाँ से मिल सकते हैं।

साक्षरता : ब, ब, ल

चित्र : मनीराम बीजभंडार में आया है। वह संकर बीज का बोरा खरीद रहा है।

विषय : जमीन में पानी की कमी

चर्चा के लिए सुझाव : नए किस्म के बीजों की जानकारी कहाँ से मिलती है ?
संकर बीज और उन्नत किस्म के बीच बोने से क्या फायदा है ?
आपके नजदीक कृषि विज्ञान केन्द्र कहाँ पर हैं ?
कृषि विज्ञान केन्द्र हमारी क्या मदद करते हैं ?

पाठ 5

पानी नहीं बरसा

विषय : बारिश न होने का प्रभाव।

उद्देश्य : बारिश न होने की स्थिति में नुकसान, तथा इस स्थिति का सामना करने के बारे में चर्चा करना।

साक्षरता : ह, स, ि, ी, े, ै, ो, ौ मात्राओं के साथ लगाई जाने वाली बिन्दी। इस बिन्दी का प्रयोग चन्द्र बिन्दु के स्थान पर होता

है। जैसे सिंचाई, नींद, बेंत, भैंस, चोंच, सौंफ।

चित्र : बारिश नहीं हुई है। मनीराम और उसकी पत्नी अपने सूखे खेत में खड़े आकाश की ओर देख रहे हैं।

चर्चा के लिए सुझाव : बारिश पर निर्भर रहने वाले इलाकों की कौन-कौन सी समस्याएँ हैं?

ऐसे इलाकों में पानी की कमी को कैसे दूर किया जा सकता है?

खेती के अलावा किसान कौन कौन से धंधे आसानी से शुरू कर सकता है?

पाठ 6

लागत बेकार गई

विषय : बारिश न होने से किसानों को होने वाले नुकसान?

उद्देश्य : बारिश पर निर्भर इलाकों में किस प्रकार के इंतजाम करें कि पानी न बरसने पर लागत बेकार न जाए।
सिंचाई के और दूसरे साधनों के बारे में चर्चा करना।

साक्षरता : ग, त, े (ए की मात्रा)

चित्र : मनीराम और उसकी पत्नी मीरा बारिश न होने से परेशान दिखाई दे रहे हैं।

चर्चा के लिए सुझाव : बारिश होने पर पानी को किस प्रकार जमा किया जाए कि पानी की कमी के समय उसका इस्तेमाल किया जा सके?

जमीन में पानी की नमी बनाए रखने के लिए क्या उपाय किए जा सकते हैं?

पाठ 7

काम के बदले अनाज मिला

विषय : सूखे की हालत में सरकार की ओर से किए जाने वाले राहत के काम।

उद्देश्य : अकाल की हालत में सरकार द्वारा किए जाने वाले सहायता के कामों के बारे में चर्चा करना।

साक्षरता : द, अ, किताबों में अ का दूसरा रूप ग्र भी मिलता है। अ आजकल प्रचलित रूप है। ि (इ की मात्रा)।

चित्र : मनीराम और उसके साथी "काम के बदले अनाज" योजना में अनाज ले रहे हैं।

चर्चा के लिए : सूखे के समय सरकार किस प्रकार सहायता करती है ?
सुझाव
सूखे के समय में सरकार की ओर से किसानों को किस प्रकार की छूट दी जाती है।

सूखे के समय पंचायत कैसे सहायता कर सकती है ?

पाठ 8

गाँव की सड़क

विषय : सूखे या अकाल के समय सरकार की मदद से किए जाने वाले विकास के काम।

उद्देश्य : सूखे के समय रोजगार व राहत के लिए सरकार द्वारा किए जाने वाले कार्यों की जानकारी देना।

साक्षरता : व, ड़, चन्द्र बिन्दु (अनुनासिक चिह्न) जैसे पाँव, पहुँच, पूँछ।

चित्र : काम के बदले अनाज योजना में गाँव की सड़क बन रही है।

चर्चा के लिए : काम के बदले अनाज योजना से आप क्या समझते हैं ?
सुझाव

सूखे के समय में सरकार की ओर से किसानों को किस प्रकार के रोजगार दिए जाते हैं ?

गाँव वाले सूखे के समय में बेकारी की समस्या का सामना आपसी सहयोग से किस प्रकार कर सकते हैं ?

पाठ 9

बेटी के लिए लड़के की खोज

विषय : छोटी उम्र में विवाह का चलन।

उद्देश्य : इस पाठ का उद्देश्य माता-पिता और युवक-युवतियों में यह विचार पैदा करना है कि छोटी उम्र में शादी करना ठीक नहीं है।

साक्षरता : ट, ए, ो (ओ की मात्रा)।

चित्र : पहला चित्र एक 17-18 साल के लड़के का है। जिसके साथ सोना की शादी होने वाली है। दूसरा चित्र सोना का है।

चर्चा के लिए : कच्ची उम्र में लड़के-लड़कियों की शादी करने से क्या नुकसान होते हैं ?

कानून के अनुसार शादी के समय लड़के-लड़की की उम्र कितनी होनी चाहिए ?

इस कानून को तोड़ने पर क्या सजा मिल सकती है ?

पाठ 10

पैसा उधार लिया

विषय : महाजन से उधार लेकर लड़की के दहेज व शादी पर हैसियत से ज्यादा खर्च करना।

उद्देश्य : शादी के समय खास तौर पर लड़कियों की शादी के समय

लोग बहुत पैसा खर्च कर देते हैं। कुछ लोग दिखावे या पुराने रीति-रिवाजों की वजह से। इस पाठ का उद्देश्य लोगों में दहेज के विरोध में जागृति लाना है। यह भी उद्देश्य है कि लोग शादी में अपनी हैसियत से ज्यादा खर्च न करें।

साक्षरता : उ, ध, ै (ऐ की मात्रा)।

चित्र : मनीराम बेटी की शादी के लिए महाजन से पैसा उधार ले रहा है। वह उधार के कागज पर अँगूठा लगा रहा है।

चर्चा के लिए सुझाव : विवाह पर हैसियत से ज्यादा खर्च क्यों नहीं करना चाहिए ?

दहेज-प्रथा को किस प्रकार दूर किया जा सकता है। आप दहेज विरोधी कानून के बारे में क्या जानते हैं ?

यह कानून क्यों बनाया गया है ?

पाठ 11

खुशी का दिन आया

विषय : बेटी की शादी और विदाई।

उद्देश्य : माता-पिता पर धन व कार्य का बोझ तथा शादी के समय उनके व लड़की के मन की स्थिति पर चर्चा करना।

साक्षरता : श, आ, ु (उ की मात्रा)।

चित्र : शादी के बाद सोना की विदाई हो रही है।

चर्चा के लिए सुझाव : शादी के वर्तमान रीति-रिवाजों में कौन-कौन से परिवर्तन किए जा सकते हैं ?

विदाई के समय सोना क्यों उदास थी ?

पाठ 12

भैंस खरीदना, दूध बेचना

विषय : आमदनी बढ़ाने के लिए दूध का धंधा।

उद्देश्य : आमदनी बढ़ाने के लिए दूध का धंधा शुरू करने के लिए सरकारी मदद की चर्चा करना।

साक्षरता : भ, च, ू (ऊ की मात्रा)।

चित्र : मनीराम ने बैंक से ऋण लिया और भैंस खरीद ली। वह उसे चारा दे रहा है।

चर्चा के लिए : गाय-भैंस खरीदने के लिए कम ब्याज पर ऋण कहाँ से मिल सकता है?

पशु-पालन के बारे में आप किस से सलाह ले सकते हैं?

आपके इलाके में दुधारू पशुओं के पालने की ट्रेनिंग कहाँ-कहाँ दी जाती है?

पशुओं की नसल कैसे सुधारी जा सकती है?

पाठ 13

दिवाली का मेला

विषय : त्योहार मनाने के ढंग।

उद्देश्य : त्योहारों के महत्त्व व उनके सही ढंग से मनाने पर चर्चा करना।

साक्षरता : इस पाठ में कोई नया अक्षर या नई मात्रा नहीं सिखाई गई है।

चित्र : गाँव में दिवाली के मेले का चित्र। मेले में रौनक है। मीरा अपनी पड़ोसिनों के साथ कुछ सामान खरीद रही है।

चर्चा के लिए : त्योहार क्यों मनाये जाते हैं।

सुझाव दिवाली क्यों मनाई जाती है?

हमारे राष्ट्रीय त्योहार कौन-कौन से हैं और वे क्यों मनाए जाते हैं?

गाँव में होने वाले किसी मेले के बारे में बताइए ?

पाठ 14

सिलाई और पढ़ाई

विषय : महिलाओं के लिए प्रौढ़ शिक्षा व कार्यात्मकता।

उद्देश्य : महिलाओं को प्रौढ़ शिक्षा से कार्यात्मकता में बढ़ोतरी के बारे में बताना।

साक्षरता: : औ, ढ़

चित्र : मीरा सिलाई की मशीन पर काम कर रही है। पास में गाँव की औरतें पढ़ना-लिखना भी सीख रही हैं।

चर्चा के लिए सुझाव : प्रौढ़ शिक्षा से आप क्या समझते हैं ?

प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों में अक्षर-ज्ञान के अलावा और क्या-क्या सिखाया जाता है ?

दस्तकारी सीखने में प्रौढ़ शिक्षा से कैसे मदद मिलती है ?

अगर माँ पढ़ी-लिखी हो तो परिवार व बालकों को क्या लाभ होता है ?

पाठ 15

कुछ इधर-उधर की

विषय : बेरोजगारी और शहरों में काम के लिए आने वाले लोगों के अनुभव।

उद्देश्य : बेरोजगारी की समस्या और गाँव से शहर आने पर जो दिक्कतें सामने आती हैं उन पर चर्चा करना।

साक्षरता : छ, इ।

चित्र : मीरा के पास उसके लड़के की चिट्ठी आई है। मीरा उसे

पढ़कर दूसरों को सुना रही है।

चर्चा के लिए सुझाव : बेकारी की समस्या क्या गाँव में ही है या शहरों में भी ?

गाँव छोड़कर लोग शहरों में किस आशा से जाते हैं ?

शहरों में रोजगार संबंधी क्या-क्या दिक्कतें आती हैं ?

गाँव से आए लोगों को शहर में पहले-पहले कौन-कौन सी चीजें अचरज में डाल देती हैं ?

पाठ 16

रक्षा बंधन

विषय : रक्षा बंधन का सामाजिक महत्त्व।

उद्देश्य : रक्षा बंधन बहन-भाई के पवित्र प्रेम का त्योहार है। इसी की चर्चा करना इस पाठ का उद्देश्य है।

साक्षरता : क्ष और अक्षरों के ऊपर लगने वाली बिन्दी (ं) जो अनुस्वार कहलाती है। आधे ङ, ञ, ण, न, म के स्थान पर लगाई जाती है।

कङ्धा	कंधा
पञ्च	पंच
पण्डा	पंडा
चन्दा	चंदा
पम्प	पंप

चित्र : सोना रक्षाबंधन पर मायके आई हुई है। वह अपने भाई को राखी बाँध रही है।

चर्चा के लिए सुझाव : रक्षा-बंधन पर बहन भाई के राखी क्यों बाँधती है ?

क्या राखी के बदले पैसे देकर भाई का कर्त्तव्य पूरा हो जाता है ?

पाठ 17

डाक्टरी सलाह

विषय : गर्भवती माँ की जाँच और देखभाल।

उद्देश्य : गर्भवती महिला की सहायता और देखभाल के लिए सरकार की ओर से दी जाने वाली डाक्टरी सलाह और सहायता के प्रबन्ध की जानकारी देना।

साक्षरता : ड, क (क का आधा रूप)। वर्णमाला के अक्षरों के आधे रूप लिखने के लिए :

(i) खड़ी पाई वाले अक्षरों की खड़ी पाई हटा देते हैं, जैसे पत्ता।

(ii) बिना खड़ी पाई वाले अक्षरों के नीचे हलन्त लगा देते हैं, जैसे चिह्न।

(iii) आधे क और फ के रूप हैं क, फ (अक्षर, दफ्तर)

चित्र : सोना माँ बनने वाली है। डाक्टर उसकी जाँच के बाद सलाह दे रही है।

चर्चा के लिए सुझाव : छोटी उम्र में माँ बनने से क्या नुकसान हैं?

जच्चा तथा बच्चे की देखभाल के लिए सरकार ने क्या-क्या सुविधाएँ दी हैं? इसके बारे में पूरी जानकारी कहाँ से मिल सकती है।

पाठ 18

जच्चा, बच्चा और अस्पताल

विषय : बच्चा पैदा होने के समय ध्यान देने योग्य बातें।

उद्देश्य : प्रसव से पहले डाक्टर या प्रशिक्षित दाई की मदद से लाभ व अस्पताल में प्रसव के समय सफाई एवं अन्य बरती जाने वाली जानकारी भी।

साक्षरता : आधा च् (च का आधा रूप), स् (स का आधा रूप) । जिस अक्षर में खड़ी पाई होती है उसका आधा रूप लिखने के लिए खड़ी पाई हटा देते हैं ।

च	च्	बच्चा
ख	ख्	सख्त
त	त्	पत्ता
प	प्	चप्पा
ब	ब्	डिब्बा

चित्र : सोना के लड़की हुई है । वह अस्पताल में है । सोना की माँ मीरा बगल में बैठी है ।

चर्चा के लिए सुझाव : बच्चा पैदा होने से पहले क्या-क्या जरूरी इंतजाम कर लेने चाहिए ।

: प्रसव के बाद माँ को किस प्रकार की खुराक दी जानी चाहिए ?

पाठ 19

फौरन चिट्ठी भिजवाई

विषय : बच्चों के जन्म की खुशी ।

उद्देश्य : बच्चा पैदा होने का समय व तारीख नोट करना । सगे सम्बन्धियों को पत्र द्वारा सूचित करने का तरीका सिखाना ।

साक्षरता : फ, ठ, ट् (ट का आधा रूप), ौ (औ की मात्रा) । जिस अक्षर में खड़ी पाई नहीं होती वहाँ अक्षर का आधा रूप लिखने के लिए अक्षर के नीचे हलन्त अर्थात् (्) चिह्न लगा देते हैं जैसे :—

ट	ट्	पट्टा			
ठ	ठ्	पाठ्य पुस्तक	द	द्	बुद्ध
ड	ड्	अड्डा	ह	ह्	चिह्न

चित्र : मनीराम बच्चे के जन्म की खुशी की खबर देने के लिए समधी को चिट्ठी लिखवा रहा है।

चर्चा के लिए सुझाव : बच्चे के जन्म के समय आपके यहाँ कौन-कौन से रीति-रिवाजों का पालन किया जाता है ?

क्या आप घर में बच्चों के जन्म की तारीख व समय नोट करते हैं ?

बच्चे के जन्म का समय और तारीख लिखकर रखने से क्या-क्या फायदे हैं ?

अस्पताल वालों से आप बच्चे के जन्म की तारीख व समय का ब्यौरा कैसे प्राप्त कर सकते हैं ?

पाठ 20

घर गृहस्थी के झंझट

विषय : अच्छी गृहिणी के लिए जरूरी बातें।

उद्देश्य : गृहिणी के घर और बच्चों के कामों और जिम्मेदारियों के बारे में चर्चा करना।

व्याख्यता : ष, ज्ञ (ज्ञ का दूसरा रूप ॹ भी किताबों में मिलता है। लेकिन आजकल ज्ञ ही प्रचलित है।(ृ) (ऋ की मात्रा)।

चित्र : सोना बच्चे को टीके लगवाने के लिए अस्पताल ले जा रही है।

चर्चा के लिए सुझाव : घर में गृहिणी की आमतौर पर क्या-क्या जिम्मेदारियाँ होती हैं ?

बड़ा परिवार होने से गृहिणी को क्या-क्या परेशानियाँ हो सकती हैं ?

छोटे बच्चों की देखभाल करते समय किन-किन बातों का खास ध्यान रखना चाहिए ?

पाठ 21

बच्चे की ऊपरी खुराक

विषय : बच्चे के लिए सही खुराक।

उद्देश्य : भोजन से शरीर बढ़ता है, बीमारियों से बचने की शक्ति मिलती है। अलग-अलग उम्र के बच्चों के लिए अलग-अलग तरह के भोजन की आवश्यकता होती है।
आयु के अनुसार बच्चों की खुराक क्या हो तथा उसकी मात्रा कितनी हो, के बारे में चर्चा करना है।

साक्षरता : ऊ

चित्र : सोना का बच्चा चार महीने का हो गया है। इसलिए वह उसे ऊपरी खुराक दे रही है।

चर्चा के लिए सुझाव : बच्चों के लिए माँ का दूध सबसे अच्छा क्यों माना जाता है?
बच्चे को ऊपरी खुराक क्यों देनी चाहिए?
5-6 महीने के बच्चे को खाने के लिए क्या देना चाहिए?
6 महीने से 9 महीने के बच्चे को क्या-क्या खिलाया जा सकता है?

पाठ 22

पंचायत के ठोस कार्यक्रम

विषय ; पंचायत के काम की जानकारी।

उद्देश्य : इस बात की जानकारी देना कि पंचायत गाँव की भलाई के लिए बनाई जाती है।
पंचायत और गाँव के लोग मिलकर कार्य करें तो अपनी बहुत-सी समस्याएँ हल कर सकते हैं।

साक्षरता : र का आधा रूप जो अक्षर के ऊपर लगता है। जैसे (ˊ) अ+र्+क=अर्क तथा आधे अक्षर के बाद आने वाला रूप जो अक्षर के नीचे लगता है जैसे (्र) प्+र+का+श=प्रकाश। लेकिन ट और ड के साथ भिन्न तरह से प्रयोग में लाया जाता है। जैसे :

ट्+रा+म=ट्राम

ड्+रा+म=ड्राम

पाठ 23

चुनाव

विषय : प्रजातंत्र में चुनाव का महत्त्व।

उद्देश्य : भारत में प्रजातंत्र है। प्रजातंत्र में चुनाव का बहुत बड़ा महत्त्व है। इस पाठ का उद्देश्य यह बताना है कि वोट के अधिकार का उपयोग धर्म और वर्ग की भावना से नहीं किया जाना चाहिए।

साक्षरता : कोई नया अक्षर नहीं सिखाया गया है।

चित्र : रसगन गाँव में लोग चुनाव का प्रचार कर रहे हैं।

चर्चा के लिए : वोट डालने का अधिकार किसको होता है ?

बगैर समझे-बूझे लोभ या लालच से वोट देने में क्या खतरा हो सकता है ?

अक्सर यह कहा जाता है कि देश की भलाई या बुराई तथा सरकार के अच्छे या बुरे होने की जिम्मेदारी वोट देने वालों पर ही है। क्या आप इससे सहमत हैं ? यदि हैं तो समझा कर बताइए।

पाठ 24

प्रधान मंत्री का भाषण

विषय : देश की समस्याओं के बारे में प्रधान मंत्री के विचार ।

उद्देश्य : यह जानकारी देना कि चुने हुए जनता के प्रतिनिधियों में से प्रधान मंत्री का स्थान सबसे बड़ा होता है । देश के विकास के वारे में प्रधान मंत्री के विचारों की चर्चा करना ।

साक्षरता : त्र, ष, ण किताबों में ण का दूसरा रूप 'रा' भी मिलता है । पर ण आजकल प्रचलित है ।

चित्र : रेडियो पर प्रधान मंत्री का भाषण आ रहा है । मनीराम और उसके पड़ोसी भाषण सुन रहे हैं ।

चर्चा के लिए : प्रधान मंत्री ने बच्चों और महिलाओं की शिक्षा पर अधिक बल क्यों दिया ?

प्रधान मंत्री ने और किन-किन समस्याओं का जिक्र किया ?

देश की समस्याओं को सुलझाने के लिए सरकार को जनता का सहयोग क्यों जरूरी है ?

पाठ 25

परिश्रम से ऋण उतारा

विषय : आमदनी और बचत

उद्देश्य : ऋण लेने से होने वाली परेशानियों तथा ऋण लेने की नौबत न आए इसके लिए बचत के महत्त्व की जानकारी देना ।

साक्षरता : श्र, ऋ

चित्र : (पृष्ठ 54 पर) मनीराम ने भैंस खरीदी है । मीरा उसका दूध निकाल कर ले जा रही है । (पृष्ठ 55 पर) दूध बेचकर जो पैसे मिले हैं, मनीराम उन्हें डाकघर में जमा करा रहा है ।

चर्चा के लिए : ऋण समय पर न चुकाने से क्या नुकसान हो सकता है ?
सुझाव

छोटी बचत की योजना सभी के लिए किस प्रकार लाभदायक है ?

पाठ 26

ऐब और ढोंग

विषय : शराब पीना और अवैध शराब बनाना ।

उद्देश्य : शराब पीने तथा अवैध शराब बनाने से होने वाले नुकसानों के बारे में बताना ।

साक्षरता : ऐ, ढ ।

चित्र : सुक्खी अवैध शराब बना रहा था, पुलिस ने उसे पकड़ लिया है ।

चर्चा के लिए : शराब पीना क्यों बुरा समझा जाता है ? इससे कौन-कौन सी
सुझाव बुराइयाँ और समस्याएं पैदा हो सकती हैं ?

शराब पीने से परिवार में शान्ति क्यों खत्म हो जाती है ?

अगर पिता शराबी हो तो बच्चों पर क्या प्रभाव पड़ सकता हैं ?

अवैध शराब बनाने का क्या नतीजा हो सकता है ?

पाठ 27

मिलकर चलें

विषय : सहकारी समिति ।

उद्देश्य : आपसी कलह और स्वार्थ के कारण सहकारी समितियाँ ठीक नहीं चल पातीं । ऐसे दोषों से सावधान रहना एवं सहकारी समिति से लाभ और ठीक ढंग से चलाने के तरीके बताना ।

साक्षरता : कोई नया अक्षर नहीं सिखाया गया है ।

चित्र : रसगन गाँव में सहकारी समिति को फिर से शुरू किया गया है। इस मौके पर सहकारी समिति का अधिकारी गाँव वालों को कुछ जानकारी दे रहा है।

चर्चा के लिए सुझाव : सहकारी समिति के क्या लाभ हैं ?

सहकारी समिति बनाने के क्या नियम हैं ?

समिति से सभी लोगों को फ़ायदा हो इसके लिए क्या-क्या कदम उठाए जाने चाहिए?

समिति बनाने और चलाने के बारे में ठीक जानकारी कहाँ से मिल सकती है ?

पाठ 28

विज्ञान से उन्नति की ओर

विषय : जीवन में विज्ञान का स्थान और लाभ।

उद्देश्य : वैज्ञानिक दृष्टिकोण और काम करने के नये तरीके अपनाने के लिए प्रौढ़ों को प्रेरणा देना।

साक्षरता : ज्ञ, ओ।

चित्र : रसगन गांव में ट्रैक्टर से खेत की जुताई की जा रही है ?

चर्चा के लिए सुझाव : विज्ञान के कारण हम अपने घरों में क्या-क्या परिवर्तन देख रहे हैं ?

काम के झंझटों को कम करने के लिए विज्ञान ने महिलाओं को क्या सहायता दी है ?

विज्ञान की वजह से खेती का काम पहले से किस तरह आसान हो गया हैं ?

पहले कुछ बीमारियाँ देवी या देवता का प्रकोप मानी जाती थीं, वे बीमारियाँ कौन-कौन सी हैं ?

पाठ 29

हम सब एक हैं

विषय : अनेकता में एकता

उद्देश्य : यह बताना कि भारत बहुत बड़ा देश है। इसमें अनेक धर्मों, जातियों और भाषाओं के लोग रहते हैं। अलग-अलग होते हुए भी हम सब एक हैं।

साक्षरता : कोई नया अक्षर नहीं सिखाया गया है।

चर्चा के लिए सुझाव : भारत में कौन-कौन सी मुख्य भाषाएँ बोली जाती हैं ?

हमारे देश में कौन-कौन से धर्म के लोग रहते है ?

हमारे देश में कितने राज्य हैं ?

हम सब एक हैं, इसका क्या मतलब है ?

उन नेताओं के नाम बताइए जिन्होंने देश की एकता के लिए जीवन भर काम किया ?

अभ्यास-पुस्तक

अभ्यास पुस्तक में 29 पाठ हैं। इसका हर पाठ पाठ्य पुस्तक के उसी नंबर के पाठ से जुड़ा है। हर पाठ में आमतौर से नीचे लिखी बातें दी गई हैं।

1. पठन-अभ्यास

जो बातें पाठ्य पुस्तक के पाठ में दी गई हैं उसी से संबंधित कुछ दूसरी बातें पढ़ने के लिए दी गई हैं।

2. लेखन-अभ्यास

अभ्यास-पुस्तिका में लिखना सिखाने के लिए पहले शिक्षार्थी को कलम पकड़ना तथा केवल लाइन खींचना सिखाएँ जिससे अक्षर लिखना सहज हो जाए। इन लाइनों को कई प्रकार से खींचें इसके कुछ उदाहरण नीचे

दिए गए हैं जैसे : ☰ ☰ |||| ... (symbols)

लेखन अभ्यास में अक्षरों, शब्दों और वाक्यों को देखकर लिखने के अभ्यास दिए गए हैं। अक्षरों की बनावट पर खास ध्यान दिया गया है। इसके अलावा इमला लिखने की भी व्यवस्था है।

3. जाँच-अभ्यास

पाठ्य पुस्तक के पाठ में जो कुछ सिखाया गया है उनकी जाँच के लिए इसमें अभ्यास हैं।

4. स्वतंत्र लेखन

पाठ्य पुस्तक में दी गई बातों को लिखने के अलावा यह भी जरूरी है कि शिक्षार्थी अपनी तरफ से भी कुछ लिखे। अभ्यास-पुस्तक में इसकी भी व्यवस्था है।

पाठ्य पुस्तक के हर पाठ को खत्म करने के बाद अभ्यास-पुस्तक का उसी नंबर का पाठ खत्म करना बहुत जरूरी है।

चार्ट

कुल चार्ट 10 हैं। हर चार्ट में एक चित्र है और कुछ शब्द हैं। हर चार्ट उसी नंबर के पाठ्य पुस्तक के पाठ से जुड़ा है। इनका उद्देश्य शुरू-शुरू में चर्चा के लिए सुविधा देना है। यह आशा की जाती है कि इन 10 चार्टों के उपयोग के बाद आप पाठ्य पुस्तक में दिए गए चित्रों का उपयोग चर्चा के लिए कर सकेंगे।

जाँच-पत्र

1. जाँच की जरूरत

पढ़ाई-लिखाई में जाँच बहुत जरूरी होती है। इससे शिक्षार्थियों की प्रगति का अन्दाजा लगता रहता है। उनकी कमियाँ सामने आती रहती हैं जिनको दूर करना बहुत जरूरी होता है। इसके बिना शिक्षार्थियों की सही मदद करना मुश्किल हो जाता है।

2. जाँच-पत्र-पुस्तिका का स्वरूप

"धरती के लाल" अभ्यास-पुस्तक में हर पाठ के लिए कुछ अभ्यास दिए गए हैं। साथ ही मामूली जाँच के सवाल भी दिए गए हैं। लेकिन हर सात या आठ पाठ के बाद आगे बढ़ने से पहले प्रत्येक अक्षर व शब्द को पढ़ने, लिखने और समझने की पूरी तरह से जाँच करना भी आवश्यक है। इसलिए हमने हर सातवें पाठ के बाद जाँच-पत्र दिया है। कुल मिला कर चार जाँच-पत्र हैं। प्रत्येक प्रश्न के बाद उसके लिए निर्धारित अंक भी दिए गए हैं।

3. जाँच-पत्र-पुस्तिका को काम में लाने का तरीका

(क) जाँच-पत्र पुस्तिका पर शिक्षार्थी का नाम व पता होना चाहिए। केन्द्र का पता भी होना चाहिए।

(ख) जिस दिन जाँच-पत्र-पुस्तिका काम में लानी हो उस दिन हर शिक्षार्थी को अपनी-अपनी जाँच-पत्र-पुस्तिका दे दीजिए। जाँच-पत्र भरवाने के बाद उनसे वापस ले लीजिए।

(ग) जाँच-पत्र-पुस्तिका पर पेंसिल से लिखना चाहिए। गलतियाँ हो जाएँ तो उन्हें मिटाने के लिए रबड़ भी होनी चाहिए।

(घ) जिस दिन जाँच हो उस दिन की तारीख जाँच-पत्र पुस्तिका पर जरूर डालें।

4. जाँच करने का समय

पहला जाँच-पत्र पाठ्य पुस्तक के सात पाठ पढ़ने के बाद काम में लाएँ,
दूसरा जांच पत्र 14 पाठ के बाद,
तीसरा जाँच-पत्र 21 पाठ के बाद, और
चौथा जाँच-पत्र पाठ्य पुस्तक पूरी करने के बाद काम में लाएँ।

5. जाँच-पत्रों को जाँचना

जब शिक्षार्थी जाँच-पत्रों के सवाल हल करके लौटा दें तो आपको देखना चाहिए कि जवाब ठीक है या नहीं। उसी के हिसाब से आपको अंक भी देने चाहिए। यह ध्यान रखिए कि हर सवाल के कई हिस्से हो सकते हैं। किसी-किसी सवाल में हिस्सों के 1/2 अंक हैं तो किसी में एक-एक हिस्से का 1 अंक है। किस हिस्से के लिए कितने अंक देने हैं यह सवाल के नीचे दिया गया है। उसी के हिसाब से अंक दें।

6. जाँच-पत्रों को जाँचने का परिणाम

जाँच-पत्र शिक्षार्थियों की सिर्फ जाँच के लिए ही नहीं दिए हैं बल्कि इसलिये है कि आपको पता चले कि शिक्षार्थी क्या नहीं सीख पाया है। इस कमी को पूरा करना आप का कर्तव्य है। अगर सभी शिक्षार्थी 30 और 40 के बीच अंक पाते हों तो आपको खुशी होनी चाहिए। 20 से 29 तक पाते हों तो संतोष कर सकते हैं कि काम ठीक चल रहा, है,पर थोड़ी मेहनत और चाहिए। अगर 10 से 19 तक अंक मिल रहे हों तो बहुत ध्यान देने की जरूरत है। अगर उससे कम रहे हों तो उन पाठों को जिनकी जाँच में गलतियाँ पाई गई हों तो फिर से पढ़ाने की जरूरत होगी।

18/DAE/ND/85—2,500— June, '85—MGITBPChdg.

लेखक : श्रीमती बिमला भटनागर
श्री जी० वी० भक्तप्रिय
श्री रामदास
श्रीमती शैल कुमारी अग्रवाल

सज्जा एवं प्रकाशन सहायता : श्री ओम प्रकाश गुप्ता

आवरण पृष्ठ : अभय कोठारी कम्यूनिकेशन्स सर्विसिज, अहमदाबाद

प्रकाशक : प्रौढ़ शिक्षा निदेशालय
शिक्षा एवं संस्कृति मंत्रालय
ब्लाक 10, जामनगर हाउस हटमैंट्स,
नई दिल्ली-110011
टेलीफोन नं० : 386993

वर्ष : 1985
प्रति : 25,000

प्रबन्धक, भारत सरकार पाठ्य-पुस्तक मुद्रणालय,
इन्डस्ट्रियल एरिया, चण्डीगढ़-160002 द्वारा मुद्रित